DOI: 10.51220/hjssh.v10i1.11

Himalayan J. Soc Sci.& Humanities (ISSN-0975-9891): 2015, Vol 10, pp 99-101

मत्स्य पुराण में पर्यावरण : वैज्ञानिकता एवं प्रासंगिकता

कुसुम डोबरियाल

संस्कृत विभाग

हे0न0ब0गढ़वाल वि0वि0 परिसर पौड़ी,गढ़वाल –246001 उत्तराखण्ड

Received : 09.09.2015 **Accepted: 14.10.2015**

सारांशः–

प्रस्तुत शोध पत्र में मत्स्य पुराण में वर्णित पर्यावरणीय अवयवों का विश्लेषण करते हुए उनकी वैज्ञानिकता तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनकी प्रासंगिकता का ससन्दर्भ वर्णन किया गया है।

Keyword : मत्स्यपुराण, पर्यावरण, जैव विविधता, वनस्पति संरक्षण

पर्यावरण विज्ञान की उत्पत्ति वैदिक एवं पौराणिक साहित्य में निहित है(सर्वं वेदात् प्रसिध्यति)[1] । संस्कृत वाड़मय में पर्यावरण को जीवन का आधर मानते हुए विभिन्न प्रसंगों मं पर्यावरणीय विश्लेषण एवं तद्संवर्धन हेतु जन जागृति प्रसारित करने का प्रयास किया गया है। पुरातन साहित्य में स्पष्ट रूप से वर्णित है कि जलवायु परिवर्तन एवं वैश्विक तापन ही सृष्टि प्रलय का कारण बनेंगे।[2] इस सन्देश की वर्तमान समय में प्रासंगिकता इस तथ्य से स्पष्ट है कि आज विश्व में सभी पर्यावरणविद् वैश्विक तापन एवं जलवायु परिवर्तन पर निरन्तर चिन्तन करते हुए इसके कारणों एवं संभावित समाधान का अन्वेशण करने का प्रयास कर रहे हैं(कन्वेन्शन ऑन क्लाइमेट चेंज,1992, क्योटो प्रोटोकॉल 1997,इटरगोवर्मेन्टल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज,2007) [3]

वर्तमान पर्यावरणीय शोध यह प्रमाणित करते हैं कि प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन ही पर्यायवरणक्षरण का कारण है। भारतीय पुरातन साहित्य सदियों पूर्व यह तथ्य जागृतिपूर्वक प्रसारित कर चुका है कि समाज को ममता एवं आसक्ति का त्याग करते हुए मात्र कर्तव्यपालन हेतु ही विषयों का उपयोग करना चाहिए।

ईशा वास्यमिदं सर्वं यात्कि जगत्यां जगत ।
तेन् त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृञ्च कस्यस्विद्धनम्।।

(ईशा वास्योपनिषद्)[4]

मत्स्य पुराण के अन्तर्गत 291 अध्याय है जिनमें कुल 14 हजार श्लोक वर्णित है। पर्यावरण के विभिन्न अवयव, उनकी महत्ता तथा संरक्षण एवं संवर्धन मत्स्य पुराण के भिन्न–भिन्न अध्यायों में वर्णित हैं जिसमें समाज को यह सन्देश देने का प्रयास किया गया है कि पर्यावरण संरक्षण मानव अस्तित्व से युग्मित है। अतः मानव सभ्यता के संरक्षण हेतु पर्यावरण संरक्षण अत्यन्त आवश्यक है।

© SHARAD

साहित्य में पर्यावरण के पांच आधरभूत प्राकृतिक तत्वों के रूप में जल,वायु,अग्नि,आकाश एवं पृथ्वी वर्णित है। वैज्ञानिक दृष्टि से पारिस्थितिकी को जैविक एवं अजैविक कारकों में विभक्त करते हुए जल,मृदा एवं वायु की गुणवत्ता तथा उत्पादक एवं उपभोक्ता जीवों का अध्ययन किया जाता है। सृष्टि के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भिन्न–भिन्न प्रसंगों में कथाओं के माध्यम से पर्यावरणीय संचेतना प्रचारित करने का प्रयास किया गया है।

जल,वन एवं मृदा संरक्षण की प्रासंगिता वर्तमान में शिक्षा एवं शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में पमुख रूप से उध्रित है। कारण यह है कि विगत वर्षो में जलवायु परिवर्तन एवं वैश्विक तापन के कारण ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हुई जिससे पृथ्वी के सम्पूर्ण अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लग गया है।इन सभी परिस्थितियों के लिए वैज्ञानिक अध्ययन मानवीय गतिविध्यिों को ही कारण मानते हैं। मत्स्यपुराण के 58 वें अध्याय में जलाशयों एवं.........किस प्रकार बनायें तथा ऐसा करने से कैसे–कैसे फल प्राप्ति होती है।

प्रागुदक्प्रवणे देश तड़ागस्य समीपतः।

चतुर्हस्ता शुभां वेदी चतुरस्त्रां चतुर्मुखाम।[5]

नदियों की उत्पत्ति एवं मानव जीवन के लिए उनका महत्व मत्स्यपुराण का महत्वपूर्ण विषय रहा है।[6] मत्स्यपुराण में वर्णित है कि–

गंगा च यमुना चैव उमें तुल्यफले स्मृते।

केवलं ज्येश्ठभावेन गंगा सर्वत्र पूज्यते।।[7]

वैज्ञानिक तथ्य भी यह स्पष्ट करते हैं कि गंगा की घाटी उपजाऊ एवं धन–धान्य प्रदान करने वाली है यही कारण है कि अधिकार मानवसंस्कृति गंगा के तट ही फलीभूत हुई है किन्तु मानव की विषयासक्त प्रवृति नदियों के प्रदूषण के लिए भी उत्तरदाई है।

वृक्ष,वन एवं वनस्पति संरक्षण वर्तमान में प्राकृतिक संरक्षण के पर्याय बन चुके है। वैज्ञानिक अध्ययन वन संरक्षण एवं वैश्विक तापन में सीधा सम्बन्ध स्थापित करते है क्योंकि वृक्ष प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया में कार्बनडाइआक्साइड का अवशोषण करते हुए धरती पर जीवन दायिनी ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाती है। तथा तापमान को भी नियन्त्रित करती है। इसके अतिरिक्त वन संरक्षण से मृदा संरक्षण,जल संरक्षण एवं वन्यजीव संरक्षण भी स्थापित होता है। मत्स्यपुराण में प्रमुखता से जन सामान्य में जागृति पैदा की गई है कि श्रृद्वापूर्वक विभिन्न वृक्षों का रोपण करने से विभिन्न फलप्राप्त होते है। ऐसे व्यक्ति सामाजिक सुरक्षा का वाहक बनते हुए सृष्टि का संरक्षण करते हुए अपार पुण्य के भागी बनते है [8]–

अनेन विधिना यस्तु कुर्याद् वृक्षोत्सवं बुध।

सर्वान कामानऽवाप्नोति फलं चानन्तयमुष्नते।।

यश्चैकमपि राजेन्द्र वृक्षं संस्थापयेन्नरः।।

सोऽपि स्वर्गे वसेद् राजन् यावदिन्द्रायुत्रयम्।।

(मत्स्यपुराण / 59 / 16–17)

हरित जैव विविधता एवं वन संरक्षण को भी मत्स्यपुराण में विभिन्न अध्यायों में स्थान दिया गया है। वर्ष पर्वत के रूप में सात पर्वतों का वर्णन मत्स्यपुराण में प्रमुखता से किया गया है। (हेमदान

पर्वत हेमकूट, पर्वत, निषध पर्वत, मेरू पर्वत नीलपर्वत, श्वेतपर्वत तथा श्रृंगवान पर्वत)[9] इनके अतिरिक्त सातं कुल पर्वतों का वर्णन (महेन्द्र पर्वत, मलय पर्वत,सह्य पर्वत,शुक्तिमान पर्वत,ऋक्षवान पर्वत विन्ध्य एवं परियात्र पर्वत)[10] भी यह पुष्टि करते हैं कि पौराणिक साहित्य में बनों का वर्गीकरण भी वैज्ञानिक रूप से प्रदर्शित हैं। वैंज्ञानिक शोध भी यह प्रमाणित करते है कि वनों की गुणवत्ता एवं वन्यजीव विविधता एक दूसर के पूरक है।

वन्यजीव संरक्षण पर्यावरण एवं परिस्थितिकी का प्रमुख वर्ण्य–विषय है। पारिस्थितिकी यह सुस्पष्ट करती है कि प्रकृति में भोजन श्रृंखला एवं क्रमिक श्रृंखला की उपलब्धता अत्यन्त आवश्यक है। यदि किसी भी परिस्थिति में यह क्रम टूटता है तो यह प्राकृतिक असंतुलन का कारण बनता है। इसी परिप्रेक्ष्य में मत्स्यपुराण में सभी जीव जन्तुओं के संरक्षण की महत्ता वर्णित है।[11]

वर्तमान में मानव अपनी असीमित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वन्यजन्तुओं का शिकार कर रहा है। शासन स्तर पर जीव जन्तुओं के संरक्षण पर कई परियोजनायें चलाई जा रही है। मत्स्यपुराण में उद्धृत यह श्लोक यह दर्शाता है कि तत्समय महान)ऋषियों की कृपा से हिसंक जीव भी एक दूसरे की हिंसा करने से यथासम्भव बचा करते थे–

तत्प्रसादात् प्रभायुक्तं स्थावरैर्जड़मैस्थता।
हिंसन्ति हि न चान्योयं हिंसकास्तु परस्परम्।।[12]

उपुयुक्त संक्षित विवेचना से मत्स्यपुराण में वर्णित पर्यायवरण की वैज्ञानिकता एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता प्रमाणित होती है।

सन्दर्भ–

1. मनुस्मृति,2,7
2. कुसुम डोबरियाल एवं जे0 के0 गोदियाल (2010) मत्स्यपुराण में वर्णित प्रकृति संरक्षण की महत्ता का संक्षिप्त विवेचन, हिमालयन जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज एण्ड ह्यूमेनिटीज,अंक 5 पृ0 71–80
3. क्योटो प्रोटोकॉल,विल्कीपीडिया इन्साइक्लोपीडिया।
4. श्री अच्युतानन्द तीर्थ जी महाराज (19) दीर्घजीवी पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण।सस्टेनेबल इकोसिस्टम एण्ड इनवायरनामेण्ट (सम्पादनः डी0आर0 खन्ना एवं साथी) पृ0 1–2
5. मत्स्यपुराण ,अ0 58 श्लोक 1–52 कल्याणांक, 1984
6. वही अ0 114 श्लोक 20–24
7. वही अ0 108श्लोक 33
8. वही अ0 59 श्लोक 1–19
9. वही अ0 113 श्लोक 4–37
10. वही अ0 114 श्लोक 17–18
11. वही अ0 118 श्लोक 46–59
12. वही अ0 118 श्लोक 63

© SHARAD